दिव्य हिमगिरि

हिमालयी राज्यों की पहली साप्ताहिक पत्रिका

नज़र सब पर

15th ANNIVERSARY

वर्ष 15 | अंक 36 | मूल्य 05 रुपये | 25-31 जनवरी, 2026

26 जनवरी 2026

गणतंत्र दिवस पर दिखेगी उत्तराखंड के विकास की झलक

फाइल नहीं, फील्ड से बनेगा विकसित उत्तराखंड

HERITAGE AVIATION
onward on wings

पहाड़ों की दूरियां हो रही हैं कम,
हेरिटेज एविएशन की सस्ती उड़ानों के संग

UDAN

Book now
www.airheritage.in
88510-72020

देहरादून एयरपोर्ट से

देहरादून से नैनीताल नैनीताल से देहरादून	8:00 & 11:30 8:50 & 12:20	मात्र ₹ 3500
देहरादून से बागेश्वर बागेश्वर से देहरादून	11:15 & 15:05 10:20 & 15:30	मात्र ₹ 3500
देहरादून से न्यू टिहरी न्यू टिहरी से देहरादून	9:55 & 13:30 11:00 & 14:35	मात्र ₹ 2000
न्यू टिहरी से श्रीनगर श्रीनगर से न्यू टिहरी	10:10 & 13:45 10:50 & 14:25	मात्र ₹ 1000
श्रीनगर से गौचर गौचर से श्रीनगर	10:20 & 13:55 10:35 & 14:10	मात्र ₹ 1000

हल्द्वानी हेलीपोर्ट से

हल्द्वानी से मुनस्यारी मुनस्यारी से हल्द्वानी	7:45 & 12:35 8:20 & 13:10	मात्र ₹ 5000
हल्द्वानी से पिथौरागढ़ पिथौरागढ़ से हल्द्वानी	9:40 & 12:30 10:35 & 13:25	मात्र ₹ 4000
हल्द्वानी से चंपावत चंपावत से हल्द्वानी	9:00& 15:25 9:15 & 15:45	मात्र ₹ 2000
हल्द्वानी से बागेश्वर बागेश्वर से हल्द्वानी	9:55 & 14:00 11:55 & 14:25	मात्र ₹ 3500
हल्द्वानी से अल्मोड़ा अल्मोड़ा से हल्द्वानी	11:15 & 14:10 12:00 & 14:55	मात्र ₹ 3500

पिथौरागढ़ एयरपोर्ट से

पिथौरागढ़ से अल्मोड़ा अल्मोड़ा से पिथौरागढ़	11:45 & 14:40 11:30 & 14:25	मात्र ₹ 1500
पिथौरागढ़ से मुनस्यारी मुनस्यारी से पिथौरागढ़	10:05 & 12:55 10:20 & 13:10	मात्र ₹ 2500

5% Gst extra

instagram.com/flywithheritage
facebook.com/heritageaviationpvtltd
twitter.com/flywithheritage

TURQUOISE
EARLY YEARS

A re-imagined approach
to early education

Blooming soon in your neighbourhood.

• Pre-Nursery to Senior KG • Age 2 Years & Above •

by

The TonsBridge Family

IN THE HEART OF THE CITY

CHAKRATA ROAD

Near FRI Main Gate, Dehradun

REGISTRATIONS OPEN | SESSION 2026-27

- Vedic-inspired practices nurturing Sanskar and strong character
- Automatic transfer to The TonsBridge Main Campus
- Play-based, sensory learning guided by expert educators
- Regular campus visits for early exposure and confidence

For Admissions Queries

Call: +91 95202 50273

www.turquoiseearlyyears.com

info@turquoiseearlyyears.com

Sandeep Sir's

ESTD.2005

Doon Defence Academy®

An Ocean of Success

COUNTRY FIRST

22 YEARS OF SUCCESS

DOON DEFENCE ACADEMY सफलता का महासागर

सैनिक स्कूल पैटर्न

ADMISSION OPEN SESSION 2026-27

FOUNDATION COURSES AT DDA

Integrated Programme Classes VI – XII (CBSE) Schooling + NDA,
Dual NDA + JEE, Merchant Navy, CPL, RIMC/RMS & SS Preparation.
A Unique Combination Entirely Based On RIMC Pattern.

CALL : +91 8266061666, +91 7895626868

ADMISSIONS Open for session 2026-27

NDA | CDSE | SSB | AFCAT | AGNIVEER

FOUNDATION CLASS VI - CLASS XII (CBSE BOARD) | MERCHANT NAVY | RIMC | RMS SAINIK SCHOOL

Scan and REGISTER NOW

MORE THAN 15000+ SELECTIONS IN LAST 22 YEARS

Address : हमारी कोई अन्य शाखा नहीं है।
Opposite Green View Apartments
Sahastradhara Road, Near IT Park,
Dehradun - 248001 Uttarakhand

Contact :
+91 9897030757, +91 8279640145
+91 8266061666, +91 7895616868
www.doondefenceacademy.com

वर्ष 15 | अंक 36

दिव्य हिमगिरि

25-31 जनवरी, 2026

संपादक
डॉ. कुँवर राज अस्थाना

वरिष्ठ संवाददाता
शंभूनाथ गौतम

संवाददाता
पूनम आर्या

विज्ञापन
सुनील सेमवाल

ग्राफिक डिजायनर
देव भट्ट

संवाददाता
हरिद्वार: डॉ. रजनीश गौतम
पौडी: रत्नमणि भट्ट
कोटद्वार: के.पी. बौंठियाल
रूद्रपुर: हेमचन्द्र बुडलाकोटी
चमोली: मुकेश रावत
रुड़की: श्रीगोपाल नारसन
नैनीताल: शीतल तिवारी
अल्मोड़ा: संजय कुमार अग्रवाल (एड.)
विकासनगर: अजय शर्मा
प्रसार: रमेश सिंह रावत

संपादकीय कार्यालय : 6, म्युनिसिपल रोड, बाला हिसार स्कूल के सामने, डालनवाला देहरादून (उत्तराखंड)
मोबाइल : +91 8433456398, 9410353164
Email: divyahimgiriddn@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक कुँवर बहादुर अस्थाना द्वारा आईशा प्रिंटिंग प्रेस, 292/1, चुक्खूवाला, ओंकार रोड, देहरादून-248001 उत्तराखण्ड से प्रकाशित।
संपादक: कुँवर बहादुर अस्थाना*

*(पीआरबी एक्ट के तहत प्रकाशित सामग्री के लिए उत्तरदायी)

संपादकीय

अरावली को खोकर आगे बढ़ पायेगा भारत!

देश में अवैध और अवैज्ञानिक तरीके से खनन तथा इसके पर्यावरण पारिस्थितिकी पर पड़ने वाले प्रभाव को लेकर अक्सर सवाल उठते रहे हैं। ये तर्क सही हो सकते हैं कि खनन गतिविधियां विकास प्रक्रिया का हिस्सा हैं, लेकिन क्या पर्यावरण की कीमत पर विकास की राह तलाशना उचित है? पिछले कुछ दिनों से चर्चा में रहे अरावली पर्वत-श्रृंखला के मसले को लेकर यह बहस जोर पकड़ रही है कि अगर कोई प्राकृतिक संरचना किसी क्षेत्र के लिए जीवन-धारा और सुरक्षा दीवार के रूप में खड़ी है, तो क्या उसका संरक्षण जरूरी नहीं है! हाल के वर्षों में अरावली क्षेत्र में खनन गतिविधियां बढ़ी हैं और इससे होने वाले नुकसान को लेकर उठी आवाज की अनदेखी हुई है। यही वजह है कि बुधवार को सर्वोच्च न्यायालय ने भी स्पष्ट किया कि अरावली में खनन और इससे संबंधित मुद्दों की व्यापक एवं समग्र जांच जरूरी है तथा इसके लिए विशेषज्ञों की एक समिति गठित की जाएगी। साथ ही इस बात पर जोर दिया कि अरावली क्षेत्र में अवैध खनन से पर्यावरण को अपूरणीय क्षति हो सकती है। गौरतलब है कि पिछले दिनों सर्वोच्च न्यायालय ने यह व्यवस्था दी थी कि आसपास की जमीन से कम से कम सौ मीटर ऊंचे हिस्से को ही अरावली पहाड़ी के तौर पर माना जाएगा। अदालत की इस नई परिभाषा के बाद यह आशंका पैदा हो गई थी कि अगर सौ मीटर से कम ऊंचाई वाली पहाड़ियों पर खनन, निर्माण और व्यावसायिक गतिविधियों के रास्ते खुलेंगे, तो इसके बाद समूचे इलाके के पारिस्थितिकी तंत्र पर गंभीर पर्यावरणीय प्रभाव पड़ सकते हैं। क्योंकि, पहाड़ियों के बीच पांच सौ मीटर की दूरी के मानक से अरावली का बड़ा हिस्सा पर्यावर संरक्षण से बाहर हो सकता था। हालांकि, बाद में शीर्ष अदालत ने अपने इस फैसले को स्थगित करते हुए कहा था कि इस मामले में कुछ गंभीर अस्पष्टताओं का समाधान जरूरी है। अब न्यायालय ने सरकार को चार सप्ताह के भीतर खनन क्षेत्र के विशेषज्ञ और वैज्ञानिकों के नाम सुझाने का निर्देश दिया है, ताकि विभिन्न पहलुओं की जांच के लिए विशेषज्ञ समिति का गठन किया जा सके। मगर यह पहलू भी महत्त्वपूर्ण है कि विशेषज्ञों की समिति बिना किसी दबाव और निष्पक्षता से अध्ययन कर अपने सुझाव सामने रखे। इस चिंता को दूर करने के लिए शीर्ष अदालत ने स्पष्ट कहा है कि यह समिति उसके निर्देशन और निगरानी में कार्य करेगी। दरअसल, राजस्थान, हरियाणा और गुजरात से लेकर दिल्ली तक के सैकड़ों किलोमीटर इलाके में फैली अरावली पर्वत-श्रृंखला को उत्तर भारत में पर्यावरण को संतुलित रखने की लिहाज से एक प्राकृतिक दीवार के रूप में देखा जाता है। मगर पिछले कुछ वर्षों से अरावली क्षेत्र में जिस तरह पत्थर, रेत और अन्य संसाधनों की पूर्ति के लिए खनन गतिविधियां बढ़ी हैं, उससे इलाके के पर्यावरण पर संकट के बादल मंडराने लगे हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि अरावली के आसपास के क्षेत्र में भूजल स्तर को सामान्य बनाए रखने, रेगिस्तान बनने से रोकने और लोगों की आजीविका बचाने के लिए इसका संरक्षण जरूरी है। इसे न केवल पर्यावरणीय, बल्कि भूगर्भीय और जलवायु संबंधी महत्त्व की दृष्टि से भी देखने और मूल्यांकन करने की जरूरत है। अगर अरावली की पहाड़ियों में अवैध और अवैज्ञानिक तरीके से खनन पर रोक नहीं लगाई गई, तो निश्चित रूप से निकट भविष्य में इसके गंभीर परिणाम सामने आ सकते हैं।

डॉ. कुँवर राज अस्थाना

याद कीजिए उन्हें जिनकी मतदाता सूची पुनरीक्षण में चली गई जान!

डॉ श्रीगोपाल नारसन
एडवोकेट

आज पूरा देश राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाया रहा है। इस दिन भारत निर्वाचन आयोग की स्थापना 25 जनवरी सन 1950 में हुई थी। भारत निर्वाचन आयोग की स्थापना दिवस की स्मृति में ये दिन चुना गया है। वास्तव में लोकतंत्र की असली ताकत मतदान पेटी में ही होती है। जब कोई नागरिक वोट डालने मतदान केंद्र पर पहुंचता है, तो वह सिर्फ एक बटन नहीं दबाता या फिर मतपत्र पर मुहर नही लगाता, बल्कि वह देश की दिशा भी तय करता है। 26 जनवरी को हमारा देश गणतंत्र हुआ। इस दिन से भारतीय संविधान आधिकारिक तौर पर लागू हुआ, जिसमें हर नागरिक को वोट का अधिकार मिला ।संविधान में दिए गए कर्तव्य में से एक है, भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करना। मतदान रूपी इस कर्तव्य के जरिए प्रत्येक नागरिक लोकतांत्रिक देश के निर्माण में योगदान देता है। राष्ट्रीय मतदाता दिवस इसी नागरिक शक्ति का उत्सव है, जो हर साल हमें हमारे सबसे बड़े अधिकार और कर्तव्य यानी मतदान की याद दिलाता है। अगर हम वोट नहीं देते, तो हम अपने फैसले का अधिकार छोड़ देते हैं। राष्ट्रीय मतदाता दिवस यही सिखाता है कि लोकतंत्र तभी जीवित रहता है, जब नागरिक सक्रिय रहते हैं। देश के 12 राज्यों में 41 करोड़ से अधिक मतदाताओं के घर जब 5 लाख 32 हजार बीएलओ यानि बूथ स्तरीय अधिकारी जब अपना कर्तव्य निभा रहे थे तब मतदाता पुनरीक्षण के दौरान 22 दिनों में 7 राज्यों के अंदर 25 बीएलओ की मौत काम के कथित दबाव के चलते हो गई। जिस पर अखिलेश यादव से लेकर ममता बनर्जी तक ने मतदाता पुनरीक्षण से मौत के मामलों को जोड़ते हुए केंद्र सरकार पर निशाना साधा।बिहार में तीन महीने के भीतर जब मतदाता पुनरीक्षण की प्रक्रिया में 77 हजार 895 बीएलओ यानी बूथ लेवल ऑफिसर लगाये गए थे। देश के अलग-अलग राज्यों से बीएलओ के काम के दबाव में जान देने या फिर अधिकारियों की तरफ से दबाव के आरोप लगाकर नौकरी छोड़ने, काम छोड़ने की खबरें आती रही हैं। मध्य प्रदेश में 9, उत्तर प्रदेश और गुजरात में चार-चार पश्चिम बंगाल और राजस्थान में तीन-तीन, तमिलनाडु-केरल में तीन-तीन बीएलओ के काम करने के दौरान या फिर काम के दबाव की वजह या तो जान गई या फिर आरोप लगा कि काम का दबाव बढ़ने पर उन्होंने जान दे दी। हांलाकि चुनाव आयोग या उससे जुड़े जिले के अधिकारी इन आरोपों को नहीं मानते है, उनका कहना है कि जांच हो रही है, लेकिन सवाल है कि क्या समस्या को जड़ से समझा गया है? उत्तर प्रदेश के जौनपुर में एक परिवार इसलिए टूट गया है, क्योंकि बेटा जो गोंडा में शिक्षक था, वह बीएलओ की डयूटी कर रहा था, और उसने सुसाइड कर लिया था। विपिन यादव ने गोंडा में बीएलओ का काम करते हुए अधिकारियों पर काम के दबाव का आरोप लगाकर जहर खा लिया था। उनपर केवल बीती 4 दिसंबर तक फॉर्म देने, जमा करने और डेटा भरने को लेकर दबाव था। उनके परिजनों ने गंभीर आरोप लगाया है। आरोप है कि ओबीसी का वोट काटने का दबाव दिया जा रहा था। अधिकारियों ने हर आरोप की जांच के लिए कमेटी बना दी है।

इसी तरह यूपी के ही बरेली में बीएलओ का काम करते सर्वेश कुमार की भी हार्ट अटैक से मौत हो गई। इसी तरह पश्चिम बंगाल के दक्षिण 24 परगना जिले में बीएलओ का काम करते कमल नस्कर को हार्ट अटैक आ गया और उनकी मौत हो गई। बीएलओ कमल ने लगभग 1160 मतदाता पुनरीक्षण फॉर्म अपने क्षेत्र के वोटरों को घर-घर पहुंचा दिए थे, लेकिन उनमें से वह केवल 20 फॉर्म ही वापस ला पाए, जबकि दबाव था कि 26 दिसम्बर से पहले सारे फॉर्म लेकर आ जाओ। मृतक की बेटी ने आरोप लगाया कि उनके पिता इस काम की वजह से मानसिक तनाव में थे, इसलिए वे बीमार पड़ गए और यह दबाव सहन नहीं कर पाने के कारण उनकी जान चली गई।वही कुछ बीएलओ ऐसे भी है जिन्होंने काम के दबाव में नोकरी ही छोड़ दी। उत्तर प्रदेश के नोएडा से कविता नागर नाम की अध्यापिका ने इस्तीफा देते हुए लिखा है कि मैं हाजीपुर में टीचर हूं, 20 साल से काम कर रही हूं, लेकिन अब बीएलओ के तौर पर काम करना कठिन हो गया है। फील्ड में लोगों का व्यवहार और अधिकारियों का रवैया बहुत दुखद है।मानसिक रूप से परेशान हूं, इस्तीफा दे रही हूं। बता दीजिए BLO वाला सारा सामान किसको सौंप दूं। हांलाकि विभाग कहता है कि ये इस्तीफा बस वायरल है, विभाग को नहीं मिला है। यानि हम कह सकते है कि लोकतंत्र के लिए मतदाता पुनरीक्षण कार्य वास्तव में कितना कठिन है, जो देश के सबसे छोटे अधिकारियो में से कुछ को जान तक से हाथ धोना पड़ा है या फिर नोकरी छोड़नी पड़ी है।जिनकी जान चली गई उन्हें कम से कम आज के लिए हम श्रद्धांजलि तो दे ही सकते है और यह उपाय भी कर सकते है कि फिर ऐसे किसी की जान न जाने पाए।

फाइल नहीं, फील्ड से बनेगा विकसित उत्तराखंड

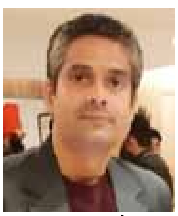

शंभू नाथ गौतम
वरिष्ठ पत्रकार

विकसित भारत 2047 के राष्ट्रीय संकल्प को जमीन पर उतारने की दिशा में उत्तराखंड ने ठोस कदम बढ़ा दिए हैं। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में सिविल सर्विसेस इंस्टीट्यूट में आयोजित दो दिवसीय चिन्तन शिविर एवं डॉयलाग ऑन विजन 2047 केवल औपचारिक विमर्श तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह भविष्य की स्पष्ट, व्यवहारिक और समयबद्ध कार्ययोजना गढ़ने का मंच बना। मुख्यमंत्री ने प्रशासनिक अधिकारियों को साफ संदेश दिया कि अब विकास कागजी फाइलों और बैठकों से नहीं, बल्कि फील्ड में दिखने वाले ठोस परिणामों से तय होगा। किसानों की आय बढ़ाने से लेकर युवाओं के लिए रोजगार, महिलाओं को समान अवसर, पारदर्शी शासन, तकनीक आधारित प्रशासन और पर्यावरण-अनुकूल विकासहर नीति का मूल्यांकन उसके आउटपुट और आउटकम से होगा। पर्वतीय चुनौतियों को अवसर में बदलते हुए इकोनॉमी और इकोलॉजी के संतुलन के साथ उत्तराखंड को 2047 तक शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्योग, पर्यटन, कृषि और सुशासन में अग्रणी राज्य बनाने का स्पष्ट रोडमैप इस मंथन से सामने आया। संदेश एकदम साफ है, अब शासन का असली इम्तिहान जनता के जीवन में आने वाले बदलाव से होगा, क्योंकि विकसित उत्तराखंड की इमारत फाइलों में नहीं, फील्ड में खड़ी होगी।

उत्तराखंड अब योजनाओं और घोषणाओं के दौर से आगे निकलकर जमीनी बदलाव के चरण में प्रवेश कर रहा है। वर्ष 2047 तक उत्तराखंड को एक विकसित, आत्मनिर्भर और संतुलित राज्य के रूप में स्थापित करने का संकल्प अब केवल दस्तावेजों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि फील्ड में दिखने वाले ठोस परिणामों से इसकी पहचान होगी। इसी सोच को मजबूती देते हुए मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने सिविल सर्विसेस इंस्टीटयूट में आयोजित चिन्तन शिविर एवं डॉयलाग ऑन विजन 2047 में राज्य के प्रशासनिक अधिकारियों को स्पष्ट शब्दों में कहा कि अब शासन की असली कसौटी जनता के जीवन में आने वाला बदलाव होगा, न कि फाइलों में दर्ज आंकड़े। दो दिवसीय इस मंथन का उद्देश्य प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत 2047 के संकल्प के अनुरूप उत्तराखंड के लिए एक ऐसी दीर्घकालिक और व्यवहारिक रणनीति तैयार करना है, जो राज्य की भौगोलिक परिस्थितियों, संसाधनों और संभावनाओं के अनुरूप हो। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों से कहा कि उत्तराखंड को अब भविष्य की तैयारी आज से करनी होगी और इसके लिए प्रशासन को संवेदनशील, जवाबदेह और परिण ााम केंद्रित बनना होगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्ष 2047 तक भारत को पूर्ण विकसित राष्ट्र बनाने का लक्ष्य तभी हासिल किया जा सकता है, जब देश का हर राज्य समान रूप से आगे बढ़े। उत्तराखंड जैसे पर्वतीय राज्य के सामने चुनौतियां जरूर हैं, लेकिन इन्हीं चुनौतियों में विकास के बड़े अवसर छिपे हैं। आवश्यकता इस बात की है कि नीतियों और योजनाओं को राज्य की जमीनी जरूरतों के अनुरूप ढाला जाए। उन्होंने कहा कि विकसित भारत का विजन किसी एक सरकार या कार्यकाल तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक दीर्घकालिक राष्ट्रीय संकल्प है, जिसमें आर्थिक मजबूती, सामाजिक

समावेशन, तकनीकी सशक्तिकरण, सांस्कृतिक संरक्षण और सामरिक क्षमता सभी शामिल हैं। इस विजन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि विकास को केवल आंकड़ों से नहीं, बल्कि मानव केंद्रित दृष्टिकोण से देखा गया है।

अर्थव्यवस्था, रोजगार और मजबूत ढांचा बनेगा उत्तराखंड के भविष्य की नींव

उत्तराखंड को वर्ष 2047 तक एक सशक्त, आत्मनिर्भर और समावेशी राज्य के रूप में स्थापित करने के लक्ष्य को लेकर राजपुर स्थित सिविल सर्विसेज इंस्टीटयूट में आयोजित चिंतन शिविर में गहन विचार-विमर्श किया गया। इस मंथन का केंद्र बिंदु राज्य की अर्थव्यवस्था को मजबूती देना, गुणवत्तापूर्ण रोजगार के अवसर सृजित करना और विकास को गति देने वाला मजबूत व पर्यावरण-संवेदनशील ढांचा तैयार करना रहा। शिविर में इस बात पर व्यापक सहमति बनी कि संतुलित आर्थिक विकास, स्थानीय संसाधनों का प्रभावी उपयोग और तकनीक समर्थित शासन व्यवस्था ही उत्तराखंड के दीर्घकालिक विकास का आधार बनेगी। चिंतन शिविर के दौरान विशेषज्ञों, वरिष्ठ अधिकारियों और विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिनिधियों ने उत्तराखंड के भौगोलिक, सामाजिक और पर्यावरणीय स्वरूप को ध्यान में रखते हुए विकास की दिशा तय करने पर जोर दिया। वक्ताओं ने कहा कि राज्य का भविष्य केवल बड़े प्रोजेक्ट्स से नहीं, बल्कि कृषि, उद्योग, पर्यटन, कौशल विकास और स्थानीय उद्यमिता को एक साथ आगे बढ़ाने से सुरक्षित होगा। यह भी स्पष्ट किया गया कि विकास की प्रक्रिया रोजगारोन्मुखी होनी चाहिए, ताकि युवाओं को अपने ही राज्य में सम्मानजनक आजीविका के अवसर मिल सकें। अर्थव्यवस्था और रोजगार से जुड़े सत्र में इस बात पर विशेष बल दिया गया कि प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रों का संतुलित विकास ही उत्तराखंड को तेज और टिकाऊ प्रगति की राह पर ले जा सकता है। भूमि और प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग, उद्योगों के लिए अनुकूल वातावरण, सरल प्रक्रियाएं और उद्यमिता को बढ़ावा देने को आर्थिक मजबूती का आधार बताया गया। वक्ताओं ने कहा कि कौशल आधारित शिक्षा और प्रशिक्षण के माध्यम से राज्य की जनसंख्या संरचना का लाभ उठाया जा सकता है। इससे न केवल रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे, बल्कि राज्य की आय और सामाजिक स्थिरता भी मजबूत होगी। कृषि और बागवानी को पर्वतीय क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था की रीढ़ बताते हुए इन क्षेत्रों में नवाचार, मूल्य संवर्धन और स्थानीय स्तर पर उद्यम विकसित करने पर जोर दिया गया। महिला केंद्रित कौशल विकास, स्वयं सहायता समूहों और किसान उत्पादक संगठनों के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त करने की आवश्यकता रेखांकित की गई। पर्यटन क्षेत्र में प्रकृति के अनुरूप, सीमित दबाव वाला और स्थानीय समुदायों की भागीदारी से संचालित पर्यटन मॉडल अपनाने की बात कही गई, जिससे रोजगार भी बढ़े और पर्यावरण पर अनावश्यक भार भी न पड़े। शिविर में यह भी सामने आया कि उत्तराखंड की विशिष्ट पहचान उसकी अर्थव्यवस्था और पर्यावरण के बीच संतुलन में निहित है। उद्योगों के विकास में इस संतुलन को बनाए रखना राज्य की सबसे बड़ी ताकत बन सकता है। छोटे और मध्यम उद्योगों, क्लस्टर आधारित विकास, साझा सुविधाओं वाले औद्योगिक ढांचे और एकीकृत स्वीकृति प्रणाली को और मजबूत करने पर जोर दिया गया, ताकि निवेश को बढ़ावा और स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर सृजित हों। विकास को गति देने वाले ढांचे पर चर्चा करते हुए वक्ताओं ने कहा कि उत्तराखंड का भविष्य जलवायु-संवेदनशील, टिकाऊ और दीर्घकालिक ढांचे पर निर्भर करेगा। सड़क, परिवहन, ऊर्जा, शहरी नियोजन और डिजिटल सेवाओं को एकीकृत दृष्टिकोण से विकसित करने की आवश्यकता बताई गई।

प्रशासनिक तंत्र की भूमिका: नीति से परिणाम तक की जिम्मेदारी

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने स्पष्ट किया कि किसी भी विजन को साकार करने में प्रशासनिक तंत्र की भूमिका सबसे अहम होती है। नीति निर्माण से लेकर उसके क्रियान्वयन और अंतिम सफलता तक प्रशासन की कार्यशैली ही यह तय करती है कि योजनाएं कागज पर रहेंगी या जमीनी हकीकत बनेंगी। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि हर निर्णय और हर योजना को लक्ष्य आधारित और जन केंद्रित दृष्टिकोण के साथ लागू किया जाए। केवल बैठकों और आदेशों तक सीमित रहना अब स्वीकार्य नहीं है। प्रशासन को नवाचार, पारदर्शिता और समयबद्धता के साथ कार्य करना होगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज विकसित उत्तराखंड से विकसित भारत तक की यात्रा का रोडमैप तैयार किया जा रहा है। यह देखना जरूरी है कि योजनाओं से किसानों की आय में कितना इजाफा हुआ, युवाओं को कितने रोजगार मिले और महिलाओं को कितने समान अवसर उपलब्ध कराए गए। यही मापदंड किसी भी योजना की सफलता तय करेंगे। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों से विभागीय सीमाओं से ऊपर उठकर काम करने का आहवान किया। उन्होंने कहा कि विजन 2047 को साकार करने के लिए "सोलो प्लेयर" की मानसिकता छोड़कर "टीम उत्तराखंड" के रूप में काम करना होगा। उन्होंने कहा कि वर्ष 2047 में उत्तराखंड को शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्योग, पर्यटन, कृषि, ऊर्जा, तकनीक और सुशासन के क्षेत्र में किस स्तर पर पहुंचाना है, यह आज ही तय करना होगा। इसके लिए सभी विभागों के बीच बेहतर समन्वय और आगामी 25 वर्षों की स्पष्ट कार्ययोजना आवश्यक है। मुख्यमंत्री धामी ने अधिकारियों से यह भी कहा कि जहां से उन्होंने अपनी सेवा की शुरुआत की है, वहां के विकास पर विशेष ध्यान दें और जन-जन की सरकार, जन-जन के द्वार कार्यक्रम के दौरान सामने आने वाली जनसमस्याओं को गंभीरता से लेते हुए उनके समाधान सुनिश्चित करें। मुख्यमंत्री ने कहा कि विकसित उत्तराखंड की नींव तीन मजबूत स्तंभों पर टिकी है- सुशासन, तकनीक एवं नवाचार और जन केंद्रित सतत विकास। सुशासन का अर्थ केवल नियमों का पालन नहीं, बल्कि समय पर निर्णय, पारदर्शी प्रक्रिया और जवाबदेह प्रशासन है। उन्होंने कहा कि ई-गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डेटा एनालिटिक्स जैसी आधुनिक तकनीकों का उपयोग कर शासन व्यवस्था को और अधिक प्रभावी बनाया जाना चाहिए। साथ ही यह भी सुनिश्चित किया जाए कि तकनीक का लाभ केवल शहरी क्षेत्रों तक सीमित न रहे, बल्कि दूरस्थ और सीमांत गांवों तक पहुंचे। पर्यावरणीय दृष्टि से संवेदनशील राज्य होने के कारण उत्तराखंड में विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन बनाए रखना बेहद जरूरी है। आपदा प्रबंधन को विकास योजनाओं का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा।

SYNERGY
INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES
WORLD-CLASS HEALTHCARE FOR EVERYONE
सर्वे सन्तु निरामया:

NABH | Pioneer Hospital in Uttarakhand & Adjoining Region to attain most prestigious Accreditations | NABL

THANK YOU FOR YOUR TRUST

13 YEARS OF EXCELLENCE

COMMITTED TO HEALTH FOR ALL

QUALITY | CARE | COMPASSION

THE MOST TRUSTED SUPER-SPECIALITY HOSPITAL OF THE REGION

IMPORTANT MILESTONES

- More than **10 Lakhs OPD** Consultations
- More than **1.35 Lakh Patient** Admissions
- More than **6.25 Lakhs Patient** Days
- More than **1.40 Lakh Neuro** Procedures
- More than **6.25 Lakhs Radiology** Investigations
- More than **27 Lakhs Pathology** Investigation
- More than **26 Thousand** High Risk Surgeries
- More than **2.2 Lac Dialysis** Procedures
- More than **15 Thousand Heart** Procedures
- More than **1.5 Lakh Endoscopies**
- More than **2.5 Thousand High Risk** Deliveries
- More than **2.4 Thousand Joint** Surgeries

QUALITY AND PATIENT SAFETY

Mark of Consistent Quality: 3 Cycles of highest level of NABH and NABL Accreditation

Mark of Patient Safety: Less than 0.3 % Surgical Site Infection Rate

Mark of Trust: Patient Satisfaction Index: IPD 90% and OPD 93%

Mark of Competency: Emergency Response Time(<1 Minute) & Door to Balloon(<60 Minutes)

HOSPITAL AT A GLANCE

- 150 beds Multi Super Speciality
- Centrally Air Conditioned
- NABH and NABL Accreditations
- Maximum Superspecialities
- 28 Full Time Consultants
- 36 Visiting Consultants
- 55 Intensive Care Beds
- 18 Out Patients Departments
- 6 OTs including 4 Modular Ots
- 24 Hrs OPD and IPD Pharmacy
- Advanced Pathology Lab
- Advanced Microbiology Lab
- Modular Platform Analyzers
- Interventional Radiology
- 1.5T MRI with MVS & TIM
- Multislice CT Scan
- 4D USG, BMD, Mammography
- 24 Hrs Emergency Services
- Level 1 Trauma Services
- ALS & BLS Ambulances
- Advanced Neuro Lab
- Stroke Unit, Neuro HDU
- Endoscopic Neurosurgery
- Microscopic Neurosurgery
- Interventional Cardiology
- Flat Panel Cath Lab with IVUS
- CCU & Cardiac Recovery Unit
- 3D Echo with TEE
- Colour Doppler, TMT
- Holter, Tilt Test
- CABG & Valve Surgeries
- All Vascular Surgeries
- Advanced Nephrology Unit
- 12 Bedded Dialysis Unit
- CRRT Dialysis
- Advanced Urological Services
- RIRS with Holmium laser
- Urodynamics Lab
- Advanced Gastro Services
- Endosonography (EUS)
- ERCP Procedures
- Upper GI Endoscopy
- Colonoscopy
- Laparoscopic GI Surgeries
- Bariartic Surgery
- Cancer Surgeries
- Joint Replacement Surgeries
- Arthroscopy & Arthroplasty
- Advanced Orthopaedics
- Reconstructive Surgeries
- Plastic Surgeries
- Advanced Critical Care
- Interventional Pain Clinic
- Bronchoscopy & Sleep Lab
- ENT Services
- Opthalmology Services
- Tertiary Care Obs & Gynae
- Fertility Clinic
- Advanced Paediatrics
- Level 3 NICU
- Paediatric ICU
- Endocrinology
- Rheumato-Immunology
- Dermato-Cosmetology
- Psychiatry
- De-addiction Clinic
- Patient Dietary Services
- 24 Hrs Cafeteria, ATM
- Dedicated Prayer Area
- Physiotherapy, Dietetics
- Institute for Speciality Post Graduate - DNB Courses

Synergy Institute of Medical Sciences

BALLUPUR- CANAL ROAD, DEHRADUN - 248 001, UTTARAKHAND | **PHONE :** 0135 - 222 6000 / 9410101071 **VISIT US AT:** WWW.SYNERGYHEALTHCARE.IN

गणतंत्र दिवस
26 जनवरी
पर सभी देश व प्रदेशवासियों
को हार्दिक शुभकामनाएं
सीए राजेश्वर पैन्यूली
* सह-संयोजक आर्थिक प्रकोष्ठ एवं प्रवक्ता (पैनिलिस्ट) बीजेपी, उत्तराखण्ड
* राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष एवं प्रवक्ता फेडरेशन ऑफ आल इंडिया व्यापार मंडल

77वें गणतंत्र दिवस
के अवसर पर सभी प्रदेशवासियों एवं
छात्रों को हार्दिक शुभकामनाएं
डॉ सुनील अग्रवाल
प्रदेश अध्यक्ष
निजी कॉलेज एसोसिएशन, उत्तराखंड

Heartiest Congratulation on

77th REPUBLIC DAY

26 JANUARY, 2026

hi-fyh

AERO SPORTS INTERNATIONAL

Nehru Colony, Dehradun || Call: +91 8859505051

Science Toys | Science Kits | Science Projects | Aeromodelling Kits

HAPPY REPUBLIC DAY 2026

TRUST OF 60 YEARS TRUST

TRUST OF 60 YEARS TRUST

LAUNCHING - 2026

Om kalyanam Santhigiri

Holistic Wellness

Where Healing meets Awakening

India's Most Transformative & Trusted Wellness Resort

Dehradun, Uttarakhand   9719251000, 9643084614

www.omkalyanam.com   info@omkalyanam.com

Happy

Republic Day

DOON INTERNATIONAL SCHOOL

RIVERSIDE CAMPUS - DEHRADUN

(DAY BOARDING & BOARDING SCHOOL - AFFILIATED TO CBSE & CAMBRIDGE)

No.1 RANKED DAY BOARDING & BOARDING SCHOOL IN UTTARAKHAND FOR TWO CONSECUTIVE YEARS* EW AWARDS (2024-2025)

ADMISSIONS OPEN

2026-2027

INTRODUCING

PRE-PRIMARY CLASSES

(NURSERY- LKG -UKG)

FROM SESSION 2026-2027

32 ACRES
WORLD CLASS GREEN CAMPUS

UNIVERSITY of CAMBRIDGE International Examinations
CAMBRIDGE INTERNATIONAL CENTRE

For Enquiries Contact :

9627598500 | 9760111005 www.disriverside.com counselor@disriverside.com

Paundha, Via Nanda ki Chowki-Premnagar, Dehradun -248007 (Uttarakhand), India

गणतंत्र दिवस पर दिखेगी उत्तराखंड के विकास की झलक

26 जनवरी को जब तिरंगा उत्तराखंड की वादियों और मैदानों में एक साथ लहराएगा, तब यह केवल संविधान के सम्मान का दिन नहीं होगा, बल्कि धामी सरकार के नेतृत्व में आगे बढ़ रहे राज्य की विकास यात्रा का सजीव प्रदर्शन भी होगा। गणतंत्र दिवस 2026 को उत्तराखंड में राष्ट्रभक्ति, सांस्कृतिक गौरव और विकास के संकल्प के साथ मनाने की व्यापक तैयारी की गई है। राजधानी देहरादून से लेकर सीमांत जिलों तक परेड, झांकियां, सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेल आयोजन और जनभागीदारी आधारित गतिविधियों के माध्यम से यह संदेश दिया जाएगा कि उत्तराखंड न केवल अपनी परंपराओं पर गर्व करता है, बल्कि भविष्य की ओर भी पूरे आत्मविश्वास के साथ अग्रसर है। परेड ग्राउंड देहरादून में होने वाले मुख्य समारोह में ध्वजारोहण, परेड और सम्मान समारोह के साथ राज्य की उपलब्धियों और योजनाओं की झलक दिखाई देगी, जबकि विकास आधारित झांकियों में आत्मनिर्भर उत्तराखंड, महिला सशक्तिकरण, रोजगार, पर्यटन, कृषि और तकनीक आधारित शासन के प्रयासों को प्रस्तुत किया जाएगा।

26 जनवरी 2026 को उत्तराखंड में गणतंत्र दिवस केवल औपचारिक आयोजन तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि यह राज्य की विकास यात्रा, सांस्कृतिक विरासत और भविष्य के संकल्प को भी प्रदर्शित करेगा। धामी सरकार इस बार गणतंत्र दिवस को विशेष रूप से विकास, जनभागीदारी और युवा ऊर्जा के संदेश के साथ मनाने जा रही है। राज्यभर में प्रशासनिक, सांस्कृतिक और खेल गतिविधियों की व्यापक तैयारी की गई है, ताकि हर वर्ग की सहभागिता सुनिश्चित हो सके। राजधानी देहरादून में गणतंत्र दिवस का मुख्य समारोह परेड ग्राउंड में आयोजित होगा, जहां सुबह ध्वजारोहण, राष्ट्रगान और सम्मान समारोह संपन्न होंगे। इस दौरान पुलिस, होमगार्ड, एनसीसी, स्काउट-गाइड और छात्र-छात्राओं की परेड के माध्यम से अनुशासन और राष्ट्रभक्ति का प्रदर्शन किया जाएगा। परेड के साथ-साथ सांस्कृतिक कार्यक्रमों में उत्तराखंड की लोक संस्कृति, वेशभूषा और परंपराओं की झलक देखने को मिलेगी। गणतंत्र दिवस के अवसर पर राज्य की विकास यात्रा को दर्शाने वाली झांकियां और प्रदर्शनियां भी आकर्षण का केंद्र रहेंगी। इनमें आत्मनिर्भर उत्तराखंड की अवधारणा, ग्रामीण विकास, महिला सशक्तिकरण, पर्यटन, कृषि, शिक्षा और तकनीक आधारित योजनाओं को प्रस्तुत किया जाएगा। इसके साथ ही उत्तराखंड की झांकी को राष्ट्रीय स्तर पर नई दिल्ली के लाल किले में आयोजित भारत पर्व में भी प्रदर्शित किया जा रहा है, जिससे राज्य की पहचान देशभर में पहुंचेगी।

देहरादून समेत अन्य जिलों में सामुदायिक कार्यक्रमों के माध्यम से आम नागरिकों को गणतंत्र दिवस से जोड़ा जा रहा है। बच्चों और युवाओं के लिए देशभक्ति प्रतियोगिताएं, सांस्कृतिक प्रस्तुतियां, लोकगीत-नृत्य और सामाजिक आयोजनों का आयोजन किया गया है। इसके अलावा गणतंत्र दिवस रन जैसे खेल आयोजनों के माध्यम से फिट इंडिया और एकता का संदेश दिया जाएगा, जिसमें बड़ी संख्या में युवा और नागरिक भाग लेंगे। शैक्षणिक संस्थानों में संविधान, लोकतंत्र और नागरिक कर्तव्यों पर आधारित कार्यक्रम आयोजित होंगे, जिससे नई पीढ़ी में राष्ट्रीय मूल्यों के प्रति जागरूकता बढ़े। वहीं सरकारी कार्यालयों, सार्वजनिक स्थलों और प्रमुख मार्गों को तिरंगे और रोशनी से सजाया गया है, जिससे पूरे राज्य में उत्सव का माहौल बने। इस तरह गणतंत्र दिवस 2026 उत्तराखंड में केवल राष्ट्रीय पर्व नहीं, बल्कि विकास, संस्कृति और लोकतांत्रिक मूल्यों के सामूहिक उत्सव के रूप में मनाया जाएगा, जिसमें राज्य की उपलब्धियों के साथ भविष्य की दिशा

भी स्पष्ट रूप से दिखाई देगी।

गणतंत्र दिवस की तैयारियों को लेकर जारी किए दिशा-निर्देश

देवभूमि उत्तराखंड की राजधानी देहरादून में गणतंत्र दिवस को पूरे जोश, उत्साह और राष्ट्रीय गर्व के साथ मनाने की तैयारियां अंतिम चरण में हैं। तिरंगे की शान, राष्ट्रगान की गूंज और देशभक्ति के रंग में रंगी राजधानी 26 जनवरी को लोकतंत्र के महापर्व का साक्षी बनेगी। गणतंत्र दिवस को गरिमापूर्ण और सुव्यवस्थित तरीके से संपन्न कराने के लिए जिला प्रशासन पूरी तरह मुस्तैद है। इसी क्रम में गणतंत्र दिवस की तैयारियों को लेकर आयोजित समीक्षा बैठक में जिलाधिकारी सविन बंसल ने सभी विभागों को निर्देश दिए कि किसी भी स्तर पर कोई कमी न रह जाए और सभी व्यवस्थाएं समय से पहले पूरी कर ली जाएं। जिलाधिकारी ने बताया कि 26 जनवरी को सुबह 9:30 बजे जनपद के सभी शासकीय कार्यालयों में ध्वजारोहण किया जाएगा। राजधानी का मुख्य समारोह परेड ग्राउंड में आयोजित होगा, जहां राज्यपाल द्वारा ध्वजारोहण किया जाएगा। इस अवसर पर परेड, सांस्कृतिक प्रस्तुतियां और सम्मान समारोह भी आयोजित किए जाएंगे। मुख्य कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर लोक निर्माण विभाग को मंच निर्माण, बैरिकेडिंग और अन्य आवश्यक व्यवस्थाएं समय पर पूरी करने के निर्देश दिए गए हैं। विद्युत विभाग को निर्बाध विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने तथा पेयजल विभाग को कार्यक्रम स्थल पर स्वच्छ पेयजल की पर्याप्त व्यवस्था करने को कहा गया है। नगर निगम को परेड ग्राउंड और आसपास के क्षेत्रों में साफ-सफाई एवं स्वच्छता बनाए रखने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। जिलाधिकारी ने मसूरी देहरादून विकास प्राधिकरण को शहर के प्रमुख स्थलों और शासकीय भवनों पर सौंदर्यीकरण और आकर्षक प्रकाश व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। संस्कृति विभाग को शहीद स्थल पर विशेष सफाई और प्रकाश व्यवस्था कराने के साथ-साथ देशभक्ति से जुड़े कार्यक्रमों की तैयारी करने को कहा गया है। इसके अलावा सूचना, वन, ग्राम्य विकास, पर्यटन, शिक्षा, ऊर्जा, उरेडा, बाल विकास, कृषि, स्वास्थ्य सहित विभिन्न विभागों को झांकी प्रदर्शन से जुड़ी तैयारियों में सक्रिय भागीदारी निभाने के निर्देश दिए गए हैं, ताकि उत्तराखंड की विकास यात्रा और सांस्कृतिक पहचान को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया जा सके। डीएम ने मुख्य कार्यक्रम स्थल पर प्रोटोकॉल के अनुरूप अतिथियों के बैठने की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। साथ ही सभी उपजिलाधिकारियों को अपने-अपने क्षेत्रों में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों और उनके आश्रितों का सम्मान सुनिश्चित करने को कहा गया है, जिससे राष्ट्र के लिए त्याग और बलिदान देने वाले महान व्यक्तियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट की जा सके। गणतंत्र दिवस के उत्सव को और भव्य बनाने के लिए 25 और 26 जनवरी को शहर के सभी प्रमुख चौक-चौराहों और शासकीय भवनों पर विशेष प्रकाश व्यवस्था की जाएगी। 25 जनवरी को शाम 6 बजे से रात 9 बजे तक तथा 26 जनवरी को सुबह 06 बजे से 11 बजे तक प्रमुख चौक-चौराहों पर देशभक्ति गीतों का प्रसारण किया जाएगा, जिससे पूरे शहर में राष्ट्रप्रेम का वातावरण बने। इसके साथ ही 26 जनवरी को नगर निगम के टाउनहॉल में संस्कृति विभाग द्वारा कवि सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा, जिसमें देशभक्ति, लोकतंत्र और उत्तराखंड की संस्कृति पर आधारित रचनाएं प्रस्तुत की जाएंगी। इस प्रकार देवभूमि देहरादून में गणतंत्र दिवस का पर्व उत्साह, उमंग और राष्ट्रभक्ति के संदेश के साथ मनाया जाएगा, जहां अनुशासन, संस्कृति और विकास की झलक एक साथ देखने को मिलेगी।

लाल किले पर प्रदर्शित होगी 'आत्मनिर्भर उत्तराखंड' की झांकी

हिमालय की गोद में बसती देवभूमि उत्तराखंड एक बार फिर अपनी सांस्कृतिक विरासत, परंपरा और आत्मनिर्भरता का गौरव देश की राजधानी दिल्ली में प्रस्तुत करने जा रही है। राष्ट्र की एकता और विविधता का उत्सव माने जाने वाले भारत पर्व में इस बार उत्तराखंड की झांकी राज्य की विकास यात्रा के साथ-साथ उसकी आत्मनिर्भर पहचान को सजीव रूप में सामने लाएगी। तांबे की शिल्पकला, पारंपरिक वाद्य यंत्र और कारीगरों की मेहनत के जरिए झांकी उत्तराखंड की उस आत्मा को दर्शाएगी, जो सदियों से श्रम, कौशल और संस्कृति के सहारे आगे बढ़ती रही है। भारत पर्व के अवसर पर नई दिल्ली में आत्मनिर्भर उत्तराखंड की यह झांकी प्रदर्शित की जाएगी। सूचना विभाग के संयुक्त निदेशक एवं झांकी के नोडल अधिकारी केएस चौहान ने बताया कि झांकी राज्य की सांस्कृतिक, आर्थिक और पारंपरिक आत्मनिर्भरता को केंद्र में रखकर तैयार की गई है। उन्होंने कहा कि इस झांकी के माध्यम से उत्तराखंड के शिल्पी समुदाय, उनकी कारीगरी और आजीविका से जुड़ी परंपराओं को देश के सामने प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया जाएगा। नोडल अधिकारी के अनुसार भारत पर्व के आयोजन के दौरान 26 से 31 जनवरी तक दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किले में उत्तराखंड की विकास यात्रा के दर्शन किए जा सकेंगे। झांकी का ट्रेलर भाग पारंपरिक वाद्य यंत्र ढोल और रणसिंघा की आकर्षक तांबे की प्रतिकृतियों से सुसज्जित है, जो राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और शिल्पकारों की कलात्मक दक्षता का प्रतीक हैं। ट्रेलर के पहले हिस्से में तांबे के मंजीरे की एक विशाल मूर्ति दर्शायी गई है, जो तांबे की कला की बारीकियों और उसकी ऐतिहासिक महत्ता को उजागर करती है। झांकी का मध्य भाग खूबसूरती से निर्मित तांबे के बर्तनों जैसे गागर, सुरही और कुंडी को प्रदर्शित करता है। ये बर्तन उत्तराखंड के पारंपरिक घरेलू जीवन का अहम हिस्सा रहे हैं। इसी भाग के नीचे साइड पैनलों पर पारंपरिक वाद्य यंत्र भोंकोर के चित्र उकेरे गए हैं, जो झांकी की सांस्कृतिक कथा को और अधिक जीवंत बनाते हैं। झांकी के अंतिम हिस्से में तांबे के कारीगर की एक सजीव और प्रभावशाली मूर्ति लगाई गई है, जिसमें वह हाथ से तांबे के बर्तन बनाते हुए दिखाई देता है। कारीगर के चारों ओर सजे तांबे के बर्तन पीढ़ियों से चले आ रहे ज्ञान, कौशल और श्रम की गरिमा को दर्शाते हैं। यह दृश्य न केवल शिल्पकारों के परिश्रम को सम्मान देता है, बल्कि आत्मनिर्भर उत्तराखंड की सोच को भी मजबूती से सामने रखता है। यह झांकी उत्तराखंड के शिल्पी समुदाय की कारीगरी, सांस्कृतिक योगदान, आर्थिक आत्मनिर्भरता, आजीविका, कौशल और परंपरा का समग्र चित्र प्रस्तुत करती है। तांबे की प्राचीन शिल्प कला के माध्यम से झांकी यह संदेश देती है कि परंपरा और आधुनिकता के संतुलन से ही सशक्त और आत्मनिर्भर समाज का निर्माण संभव है। स्थानीय कारीगरों द्वारा पारंपरिक तकनीकों से बनाए गए तांबे के बर्तन और उपकरण न केवल उत्कृष्ट शिल्प कौशल का उदाहरण हैं, बल्कि राज्य के सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन में भी इनका विशेष स्थान रहा है। केएस चौहान ने बताया कि रक्षा मंत्रालय की ओर से राष्ट्रीय रंगशाला शिविर, नई दिल्ली में आयोजित प्रेसवार्ता के दौरान विभिन्न प्रदेशों और मंत्रालयों की झांकियों की झलक प्रेस के सामने प्रस्तुत की गई, जिसमें आत्मनिर्भर उत्तराखंड की झांकी ने अपनी अनूठी सांस्कृतिक पहचान से विशेष ध्यान आकर्षित किया।

ऐतिहासिक धरोहर और आस्था का महासंगम
नंदादेवी राजजात यात्रा

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

हिमालयी महाकुंभ श्री नंदा देवी राजजात की शुरुआत यूं तो नंदाधाम नौटी से मानी गई है, लेकिन सही मायने में यह निर्धारित तिथि से एक दिन पूर्व कांसुवा से शुरू हो चुकी होती है। इस दिन कांसुवा के राजकुंवर राज छंतोली व चौसिंग्या खाडू (मेंढा) लेकर नौटी पहुंचते हैं। नंदाधाम नौटी में भगोती नंदा की विधिवत पूजा-अर्चना के बाद से जात अगले दिन ईड़ाबधानी के लिए प्रस्थान करती है। परंपरा के अनुसार जात को फिर ईड़ाबधानी से नौटी लौटना पड़ता है। तब जाकर नौटी में स्थापित भगोती नंदा के यंत्र की परिक्रमा पूर्ण होती है और जात चल पड़ती है अपने अगले पड़ाव कांसुवा की ओर। नंदा राजजात के 20 पड़ाव हैं, जिनमें वाण तक के 12 पड़ाव आबादी के बीच से गुजरते हैं। इन सभी पड़ावों पर सैकड़ों डोली-छंतोलियों का मिलन मुख्य जात से होता है। मिलन का अंतिम पड़ाव वाण है। इसके बाद जात एकरूप होकर निर्जन पड़ावों से होते हुए हेमकुंड पहुंचती है। भगोती नंदा की मायके से ससुराल विदाई की यह परंपरा अपने आप में अनूठी है। इस अलौकिक दृश्य को अंतर्मन में सहेजकर रखना तो आसान है, लेकिन शब्दों में व्यक्त करना नहीं। प्रो. डीआर पुरोहित के अनुसार उत्तराखंड में नंदा दो अवतारों में वास करती है। यह अवतार हैं लोक देवी व शास्त्रीय देवी के। लोक देवी के रूप में नंदा पहाड़वासियों की धियाण (बहिन-बेटी) है, जबकि शास्त्रीय रूप में महिषमर्दिनी। लेकिन, जनमानस ने उसे धियाण के रूप में ही स्नेह मिला। इसी स्नेह की परिणति है 12 साल के अंतराल में होने वाली श्री नंदा देवी राजजात। नन्दा देवी राज जात भारत के उत्तराखंड राज्य में होने वाली एक नन्दा देवी की एक धार्मिक यात्रा है। मां नंदा गढ़वाल के राजाओं के साथ-साथ कुमाऊं के कत्यूरी राजवंश की इष्ट देवी के रूप में पूजी जाती थी। क्योंकि गढ़वाल और कुमाऊं के लोग मां नंदा को अपने इष्ट मानते हैं इसीलिए नंदा देवी को राजराजेश्वरी कहकर भी संबोधित किया जाता है। कुछ लोगों का कहना है कि मां नंदा पार्वती की बहन है जबकि वहीं कुछ लोग कहते हैं कि पार्वती ही नंदा देवी है। महानंदा कई नामों से प्रसिद्ध हैं जैसे शिवा, सुनंदा, शुभा नंदा,नंदिनी। मां नंदा के प्रति पूरे उत्तराखंड के लोगों में असीम श्रद्धा है। मां नंदा देवी राजजात यात्रा मां नंदा के मायके से उनको उनके ससुराल तक भेजने की यात्रा है। माना जाता है कि पट्टी चांदपुर और श्री गुरु शीतला मां नंदा का मायके है और बान्धाण क्षेत्र मां नंदा का ससुराल है। मां नंदा को उनकी ससुराल भेजने की यात्रा है राजजात। मां नंदा को भगवान शिव की पत्नी माना जाता है और कैलास (हिमालय) भगवान शिव का निवास।

किवदंती के अनुसार एक बार मां नंदा अपने मायके आई थी जिसके बाद किन्हीं कारण ों से माता 12 वर्षो तक अपने ससुराल नहीं जा पाई। इसलिए जब 12 वर्ष बाद मां नंदा को उनके ससुराल भेजा गया तो मायके वालों ने बड़े हर्षोल्लास के साथ माता को उनके ससुराल भेजा। तब से यह रीत चली आ रही है और हर 12 वर्ष बाद मां नंदा देवी राजजात का आयोजन किया जाता है। गढ़वाल राजा शाली पाल को इस यात्रा को शुरू करने और कनक पाल को इस यात्रा को एक भव्य रूप देने का श्रेय दिया जाता है। मान्यताओं के अनुसार प्राचीन काल में भगवान आशुतोष एवं पार्वती कैलाश की ओर जा रहे थे। इसी दौरान मां नंदा को प्यास लगी और वह निकटवर्ती गांव बन्धाणि जा पहुंची जबकि भगवान शंकर सीधे आगे की ओर निकल गए। बन्धाणि गांव में उस समय के चौकीदार एवं प्रधान जमन सिंह जादोडा ने मां पार्वती को पानी पिलाने के साथ-साथ उनका खूब आदर सत्कार करते हुए दही और भात खिलाया। विदा होते समय जमन सिंह ने मां पार्वती से कहा कि कैलाश जाते समय वे एक बार फिर उनके घर जरूर आएं। इसी परंपरा का निर्वहन करते हुए मां श्रीनंदा राजजात में कैलाश विदा होने से पूर्व इडा बंधानी में जादौड़ा वंशज गुसाईं लोगों के घर मां नंदा देवी की डोली रात्रि विश्राम करती है। कुछ लोग मां नंदा को पार्वती का रूप मानते हैं और मां नंदा की कहानी उस समय की बताते हैं जब पार्वती अपने पिता दक्ष के घर बिना बुलाए गई थी। साथ ही कुछ

किवदंतियां इस तरह भी प्रचलित है कि एक बार एक लड़की के मायके में किसी धार्मिक अनुष्ठान का आयोजन किया गया लेकिन मायके पक्ष ने अपनी बेटी को इस अनुष्ठान में नहीं बुलाया। लेकिन वह लड़की अपने ससुराल से लड़ झगड़ कर अपने मायके की ओर अनुष्ठान के लिए चल पड़ी। ससुराल पक्ष ने लड़की को बहुत समझाया कि तुम्हारी मायके वालों ने तुम्हें आमंत्रित नहीं किया है इस तरह जाना ठीक नहीं लेकिन लड़की नहीं मानी। लड़की ससुराल से अपने मायके की ओर जा रही थी तभी उसके पीछे एक गुस्सैल भैंस पड़ गई। उससे जान बचाते हुए वह लड़की एक केले के पेड़ के पीछे जा छुपी। इतने में वहां एक बकरी आ गई और उसने उन पत्तों को खा लिया जिनके पीछे लड़की छुपी हुई थी गुस्सैल भैंस ने लड़की को देखा और उसे कुछ इस तरीके से मारा कि उसने अपने प्राण त्याग दिए। इसके बाद ससुराल पक्ष को यही लगता रहा कि लड़की अपने मायके में है। और मायके पक्ष को भी इस बात की कोई खबर नहीं थी कि लड़की अनुष्ठान के लिए अपनी ससुराल से निकल पड़ी थी।जब बहुत समय तक दोनों पक्षों ने लड़की की खोज नहीं की तो लड़की के मायके और ससुराल में कुछ अजीबोगरीब घटनाएं होने लगी। जैसे गाय के पेट से बकरी जन्म लेने लगी लोगों की सारी फसलें खराब हो गई या फिर अलग फसल से अलग अनाज उत्पन्न होने लगा। दोनों पक्ष इस बात से परेशान हो गए कि आखिर ऐसा हो क्यों रहा है।तभी एक दिन वह लड़की किसी के सपने में आई और बताया कि मेरे साथ ऐसी ऐसी घटना हुई और तुम लोगों ने मेरी खोज नहीं की इसलिए तुम्हें मेरी याद दिलाने के लिए मैंने ऐसा किया। कहा जाता है तब से उस लड़की को मां नंदा के रूप में पूजा जाता है और देवी बनाया जाता है। आज मां नंदा संपूर्ण उत्तराखंड में कई जगह बेटी, बहन और कहीं बहू के रूप में पूजी जाती हैं। 12 साल में आयोजित होने वाली नंदा राजजात में मुख्य रूप से चौशींग्या खाडू (चार सिंह वाला बकरा) मां नंदा का सहायक माना जाता है। कहते हैं यह चार सिंह वाला बकरा हर 12 वर्ष बाद ही जन्म लेता है। उत्तराखंड में मां नंदा को अनेक रूपों में पूजा जाता है। उत्तराखंड में विवाहिता देखी या बहनों को दिशा ध्याणी कहा जाता है। इसलिए इस राजजात में बेटियों को खास महत्व दिया जाता है। दिशा के रूप में पूजने वाले लोग मां नंदा को अन्य धन्य एवं श्रृंगार सामग्री भेंट करते हैं। ससुराल पक्ष से प्राप्त होने वाली सामग्री को लोक देवी प्रसाद के रूप में आपस में बांटते हैं। घाट ब्लॉक के कुरूड , नॉटी से लेकर नारायण ाबगड के भगौती गांव तक को मां नंदा का मायका माना जाता है। यहां मां नंदा को बेटी या बहन के रूप में पूजा जाता है। भगौती के बाद मां नंदा का ससुराल शुरू हो जाता है।चमोली की नॉटी से शुरू होकर कुरूड के मंदिर से दसौली और बंधाण की डोलिया राजजात का आगाज करती है। इस यात्रा में लगभग 280 किलोमीटर की दूरी नॉटी से हेमकुंड तक पैदल यात्रा करनी पड़ती है। इस बीच उत्तराखंड के विभिन्न क्षेत्रों से अनेक छतौलिया इस यात्रा में शामिल होते हैं। नौटियाल और कुंवर लोग चौसिंग्या खाडू और रिगाल की छतौलिया लेकर आते हैं। नौटियाल और कुंवर लोग मां नंदा के उपहार को इस बकरे की पीठ पर हेमकुंड तक ले जाते हैं। वहां से यह बकरा अकेला ही आगे बढ़ जाता है और कहते हैं यह ठीक कैलाश पर्वत तक जाता है। इस खाडू के जन्म के साथ ही विचित्र चमत्कारिक घटनाएं होने शुरू हो जाती है जिस भी जगह पर या जन्म लेता है उसी दिन से वहां शेर आना शुरू कर देता है जब तक इस खाडू का मालिक राजा को अर्पित करने की मनौती नहीं रखता तब तक वहां शेर लगातार आता ही रहता है।चौसिंगा खाडू (काले रंग का भेड़) श्रीनंदा राजजात की अगुवाई करता है। मनौती के बाद पैदा हुए चौसिंगा खाडू को ही यात्रा में शामिल किया जाता है। राजजात के शुभारंभ पर नौटी में विशेष पूजा-अर्चना के साथ इस खाडू के पीठ पर फंची (पोटली) बांधी जाती है, जिसमें मां नंदा की श्रृंगार सामग्री सहित देवी भक्तों की भेंट होती है। खाडू पूरी यात्रा की अगुवाई करता है। होमकुंड में इस खाडू को पोटली के साथ हिमालय के लिए विदा किया जाता है।यात्रा का शुभारंभ नौटी में भगवती नंदादेवी की स्वर्ण प्रतिमा पर प्राण प्रतिष्ठा के साथ रिंगाल की पवित्र राज छंतोली और चार सींग वाले भेड़ (खाडू) की विशेष पूजा की जाती है। कांसुवा के राजवंशी कुंवर यहां यात्रा के शुभारंभ और सफलता का संकल्प लेते हैं। मां भगवती को देवी भक्त आभूषण, वस्त्र, उपहार, मिष्ठान आदि देकर हिमालय के लिए विदा करते हैं। राजजात समिति के अभिलेखों के अनुसार हिमालयी महाकुंभ श्रीनंदा देवी राजजात वर्ष 1843, 1863, 1886, 1905, 1905, 1951, 1968, 1987 तथा 2000 में आयोजित हो चुकी है। वर्ष 1951 में मौसम खराब होने के कारण राजजात पूरी नहीं हो पाई थी। जबकि वर्ष 1962 में मनौती के छह वर्ष बाद वर्ष 1968 में राजजात हुई।

भारत देश में कई सारी धार्मिक यात्राएं निकाली जाती हैं। इन्हीं में से एक है नंदा देवी की यात्रा। नंदा देवी राजजात यात्रा उत्तराखंड की ऐसी ऐतिहासिक धरोहरों में से एक है, जो उत्तराखंड की सांस्कृतिक महक को पूरे भारत में बिखेरे हुए है। ये यात्रा जनमानस को एक सूत्र में बांधने का काम करती है।

ये लेखक के अपने विचार हैं।
लेखक दून विश्वविद्यालय कार्यरत हैं।

वर्दी खरीद घोटाले में फंसे डीआईजी अमिताभ श्रीवास्तव सस्पेंड

बिना भुगतान के करोड़ों का घोटाला

डीआईजी के निलंबन पर उठे सवाल

वर्दी घोटाले में छिपे हैं राज

उच्च स्तरीय एसआईटी जांच ही कर सकती है घोटाले का पर्दाफाश

देहरादून। उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री ने भ्रष्टाचार के खिलाफ जीरो टॉलरेंस अपना रखा है और उन्होंने दो टूक संदेश दिया हुआ है कि अगर किसी ने भी भ्रष्टाचार या घोटाला करने का दुस्साहस किया तो उसके खिलाफ सख्त कार्यवाही अमल में लाई जायेगी। उत्तराखण्ड में भ्रष्टाचार के खिलाफ जिस तरह से एक्शन हो रहे हैं उससे अफसरों के मन में भी भय है कि अगर उन्होंने कोई भ्रष्टाचार करने का दुसाहस किया तो उनके खिलाफ सख्त कार्यवाही अमल मे लाई जायेगी। मुख्यमंत्री ने इसी संदेश के साथ मात्र होमगार्ड एवं नागरिक सुरक्षा विभाग में वर्दी सामग्री से जुडे कथित घोटाले में डिप्टी कमांडेंट को सरकार ने निलम्बित कर दिया है। यह निलंबन सतही तौर पर तो सरकार की जीरो टोलरेंस की नीति को दर्शाता है लेकिन इस निलंबन ने पुलिस विभाग की कार्यप्रणाली पर कई सवाल खड़े कर दिए हैं। पहला सवाल यह है कि जब वर्दी खरीद का अभी तक भुगतान ही नहीं हुआ तो फिर आखिर करोडो रूपये का घोटाला कहां से हो गया? इस कथित घोटाले को लेकर एक बहस छिड गई है कि अगर सरकार के मुखिया इसकी शासन के कुछ बडे अफसरों के नेतृत्व में एक एसआईटी का गठन कर उसकी जांच करा दें तो शायद वो राज भी खुलकर सामने आ सकते हैं जो अभी तक आवाम के बीच नहीं पहुंच पाये हैं? वरिष्ठ पत्रकार राजेश शर्मा की रिपोर्ट।

उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिह धामी की भ्रष्टाचार के खिलाफ आक्रामक शैली से शासन और सिस्टम के अफसर अच्छी तरह से वाकिफ हैं इसलिए वह भ्रष्टाचार करने से अपने आपको हमेशा पीछे ही रखते हैं। लेकिन होमगार्डस एवं नागरिक सुरक्षा विभाग में कथित वर्दी सामग्री खरीद से जुडे कथित घोटाले मे होमगार्ड के डिप्टी कमांडेंट अमिताभ श्रीवास्तव को सरकार ने निलम्बित कर दिया। इस निलम्बन के बाद कई सवाल आखिर खडे हो गये हैं जिसका जवाब अभी एक पहेली ही है। सवाल तैर रहे हैं कि होमगार्ड विभाग में वर्दी घोटाला सच है या कोई साजिश? विश्वस्तसूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार उत्तराखण्ड अधिप्राप्ति नियमावली में पांच लाख के अधिक मूल्य की समस्त सामग्रियों की अधिप्राप्ति हेतु शासकीय अधिप्राप्ति पोर्टल का उपयोग करके इलैक्ट्रोनिक अधिप्राप्ति पद्धति का पालन करना सभी अधिप्राप्ति इकाईयों के लिए अनिवार्य किया गया है। सवाल उठता है कि ई-टेंडर निकालने की लिखित स्वीकृति विभागाध्यक्ष द्वारा दी जाती है तो पता चला कि हां ऐसा भी हुआ है। सवाल यह कि क्या ई-टेंडर को लोग अधि प्राप्ति पोर्टल और दो अखबार में निकाला जाता है तो ऐसी चर्चा है कि हां ऐसा भी हुआ है। सवाल कि ई-टेंडर में उन्हीं निविदादाता के प्रकरणों पर विचार किया जाता है जिनके द्वारा उसमें प्रतिभाग किया गया था। यहां पता चला कि हां ऐसा भी हुआ है। सवाल उठा कि क्या तकनीकी और वित्तीय निविदा मूल्यांकन रिपोर्ट को मूल्यांकन संवीक्षा समिति के सभी सदस्यों द्वारा साईन किया जाता है तो यह भी पता चला है कि सभी उपस्थित सदस्यों द्वारा साईन भी किया गया। बताया जाता है कि मूल्यांकन संवीक्षा समिति का गठन विभागाध्यक्ष द्वारा किया जाता है। सवाल उठ रहे हैं कि क्या ई-टेंडर में न्यूनतम बोलीदाता एल-1 ऑनलाइन ही चिन्हित था या मूल्यांकन सवीक्षा समिति ने खुद से चिन्हित किया तो यह बात भी उठ रही है कि ऑनलाइन चिन्हित होता है और इसमे भी ऐसा ही हुआ। बहस चल रही है कि क्या ई-टेंडर में सामग्री का निर्धारण मूल्यांकन संवीक्षा समिति के द्वारा किये जाने का अधिप्राप्ति नियमों में कोई प्राविध ान है तो पता चला कि ऐसा कोई प्राविध ान नहीं है। सवाल खड़े हो रहे हैं कि क्या ई-टेंडर में सामग्री का पूर्व निर्धारण स्थानीय सर्वे के आधार पर मूल्यांकन संवीक्षा समिति के द्वारा किये जाने का अधिप्राप्ति नियमों में कोई प्राविधान है तो जानकारों का कहना है कि ऐसा कोई प्राविधान नहीं है परंतु सक्षम प्राधिकारी विभागाध्यक्ष द्वारा ऐसा किये जाने का निर्णय न्यूनतम बोलीदाता के पक्ष में क्रय

गोपनीय जांच कैसे हो गई उजागर?

गोपनीय जांच उजागर होना सवालों के घेरे में

देहरादून। हैरानी वाली बात है कि गोपनीय जांच शासन में गतिमान हो और ऐसे में अखिल भारतीय सेवाओं के अधिकारियों पर लागू आचरण नियमावली का उल्लंघन होना कई सवालों को जन्म दे जाता है? सवाल खडे हो रहे हैं कि अखिल भारतीय सेवाओं का आचरण नियमावली का यह स्पष्ट उल्लंघन है। साथ ही इसकी वजह से विभाग, शासन और सरकार की छवि भी कहीं न कहीं धूमिल हुई है? सबसे चौकाने वाली बात है कि कांग्रेस के नेता का एक बयान आया जिसमें उन्होंने एक बडे पुलिस अफसर की तारीफ की यह एक अत्यंत संवेदनशील प्रकरण है जिसकी गंभीरता से उच्च स्तरीय जांच होनी चाहिए कि कहीं यह सब वर्तमान सरकार को बदनाम और अस्थिर करने की कोई साजिश तो नहीं? सवाल यह भी खडे हो रहे हैं कि एक डीआईजी की जांच उसका जूनियर अधिकारी कैसे कर सकता है और इसी से कई सवाल अब इस कार्यवाही के बाद से उठने शुरू हो गये हैं और यह बात भी उठ रही है कि अगर सरकार के मुखिया इस मामले की जांच कुछ बडे अफसरों की एसआईटी बनवाकर करायें तो उससे सारा सच सामने आ सकता है?

आदेश जारी करने की स्वीकृति से पूर्व किया जाना औचित्यपूर्ण एवं तार्किक हो सकता है जो इस मामले में विभागाध्यक्ष ने नहीं किया? सवाल तैर रहे हैं कि सात सामग्री का ई-टेंडर निकला था। बताया जाता है कि एक सामग्री स्लीपिंग बैग को छोडकर छह सामग्री की स्वीकृती हुई थी और चर्चा है कि छह सामग्री को क्रय करने की स्वीकृति विभागाध्यक्ष द्वारा लगभग 28 दिनों बाद दी गई थी। सवाल खडा होता है कि 28 दिनों तक इसकी स्वीकृति क्यों नहीं दी गई और आखिर जब सात सामग्री का ई-टेंडर उन्हीं की स्वीकृति से निकाला गया तो स्लीपिंग बैग को क्यों छोडा गया?

चर्चा यह है कि यहीं से कुछ ऐसा हुआ जिसने सारा मामला घुमा दिया है? अब यह सवाल भी खडा हो रहा है कि इस ई-टेंडर को कब, क्यूं और किसने निरस्त किया? बताया जा रहा है कि ई-टेंडर को अक्टूबर 2025 के आखिरी सप्ताह में विभागाध्यक्ष ने कैंसिल किया? बताया जा रहा है कि उसका कारण ई-टेंडर सामग्री का अधिक मूल्याकंन होना बताया गया जबकि ऑनलाइन चिन्हित न्यूनतम बोलीदाता को क्रय आदेश की स्वीकृति विभागध्यक्ष ने ही पहले 28 दिनों के बाद फाइल पर पहले सात सामग्री के स्थान पर छह सामग्री को क्रय करने की स्वीकृति खुद लिखित मे दी गई और अब खुद ही ई-टेंडर कैंसिल किया, तो सवाल खडे हो रहे कि ऐसे में इस सब में अमिताभ कहां से दोषी बना दिये गये?

जल्दबाजी में लिया गया निर्णय

खबर की पड़ताल में यह सामने आया है कि ई-टेंडर की प्रक्रिया में कहीं कोई कमीं नहीं थी। कोई ठोस जांच किए बगैर निलंबन की कार्यवाही केवल एक सिफारिश पर करना एक जल्दबाजी का निर्णय ही कहा जा सकता है। जहां तक जानकारी मिली है कि निलंबन की सिफारिश केवल शक के आधार पर की गई है। अब जांच का बिंदु स्लीपर बैग की खरीद का न होना भी होना चाहिए।

मुख्यमंत्री धामी बाल विवाह मुक्ति रथ का फ्लैग ऑफ किया

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने शनिवार को मुख्यमंत्री आवास में समर्पण सोसाइटी फॉर हेल्थ रिसर्च एंड डेवलपमेंट द्वारा देहरादून में बाल विवाह की रोकथाम के लिए संचालित बाल विवाह मुक्ति रथ का फ्लैग ऑफ किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि यह रथ एक जन-जागरूकता अभियान के रूप में कार्य करेगा, जिसका उद्देश्य दूरस्थ, ग्रामीण एवं उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों तक पहुँच बनाकर बाल विवाह जैसी सामाजिक कुरीति के विरुद्ध समयबद्ध, सघन एवं प्रभावी संदेश जन-जन तक पहुँचाना है।

यह अभियान 24 जनवरी 2026 से 08 मार्च 2026 तक संचालित किया जाएगा, जिसके अंतर्गत विभिन्न गाँवों, शहरी बस्तियों, स्कूलों, पंचायतों, आंगनबाड़ी केंद्रों एवं सामुदायिक स्थलों पर नुक्कड़ नाटक, संवाद सत्र, शपथ कार्यक्रम, परामर्श शिविर, IEC सामग्री वितरण तथा जनसंवाद जैसी गतिविधियाँ आयोजित की जाएगी।

इस अवसर पर अध्यक्ष उत्तराखंड बाल अधिकार संरक्षण डॉ. गीता खन्ना, समर्पण सोसाइटी के अध्यक्ष श्री विपिन पंवार एवं अन्य लोग मौजूद रहे।

23 अप्रैल से बद्रीनाथ धाम श्रद्धालुओं का करेगा स्वागत

देवभूमि उत्तराखंड में इस साल चारधाम यात्रा श्रद्धालुओं के लिए खुशियों और भक्ति से सराबोर होने जा रही है। छह महीने की शीतकालीन बंदी के बाद उत्तराखंड के प्रमुख चार पवित्र धामों के कपाट श्रद्धालुओं के लिए क्रमशः खोल दिए जाएंगे, जिससे प्रदेश और देशभर के श्रद्धालु अपनी आस्था की यात्रा पर निकल सकेंगे। गढ़वाल हिमालय के हृदय में स्थित बद्रीनाथ धाम के कपाट 23 अप्रैल को सुबह 6 बजकर 15 मिनट पर खुलेंगे। इसके साथ ही उत्तरकाशी जिले के गंगोत्री और यमुनोत्री धाम 19 अप्रैल को अक्षय तृतीया के शुभ अवसर पर श्रद्धालुओं के लिए खोले जाएंगे। वहीं रुद्रप्रयाग जिले में स्थित केदारनाथ धाम के कपाट महाशिवरात्रि के दिन खुलने की तिथि घोषित की जाएगी। चारों धामों के खुलने की इस खबर से श्रद्धालुओं में पहले से ही उत्साह और उमंग का माहौल है। उत्तराखंड सरकार, मंदिर समिति और स्थानीय प्रशासन ने मिलकर यात्रियों के लिए हर प्रकार की सुरक्षा, स्वास्थ्य, आवास और यातायात सुविधाओं को सुनिश्चित किया है, ताकि यात्रा न केवल सुरक्षित और सुव्यवस्थित हो, बल्कि श्रद्धालुओं के लिए स्मरणीय और आनंदमय अनुभव बने। प्रशासन ने प्रमुख मार्गों की मरम्मत, सड़क सुरक्षा, बैरिकेडिंग, हेल्पलाइन सेवा, चिकित्सा व्यवस्था, आपातकालीन वाहन और पुलिस तैनाती जैसी तैयारियों को पूरा किया है। दिव्य हिमगिरि रिपोर्ट

चारधाम यात्रा का इंतजार कर रहे श्रद्धालुओं के लिए खुशखबरी है। उत्तराखंड के चमोली जिले में स्थित बद्रीनाथ धाम के कपाट इस साल 23 अप्रैल को श्रद्धालुओं के लिए खोल दिए जाएंगे। छह महीने की शीतकालीन बंदी के बाद जैसे ही यह घोषणा हुई, देशभर के श्रद्धालुओं में उत्साह और उमंग का माहौल बन गया। मंदिर समिति ने इसे बसंत पंचमी के शुभ अवसर पर आयोजित पारंपरिक धार्मिक अनुष्ठान और पंचांग अवलोकन के बाद निर्धारित किया। बद्रीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति के अध्यक्ष हेमंत द्विवेदी ने बताया कि कपाट खुलने की तिथि और समय का निर्धारण नरेंद्र नगर स्थित टिहरी राजमहल में बसंत पंचमी के दिन आयोजित धार्मिक अनुष्ठान के दौरान किया गया। इस दौरान विशेष पूजा-अर्चना, पंचांग और महाराजा की कुंडली के आधार पर शुभ मुहूर्त तय किया गया। मंदिर के कपाट 23 अप्रैल की सुबह 6 बजकर 15 मिनट पर खोले जाएंगे। इस धार्मिक आयोजन में टिहरी राजपरिवार के महाराजा मनुजेंद्र शाह, राजपुरोहित आचार्य कृष्ण प्रसाद उनियाल, टिहरी की महारानी, टिहरी गढ़वाल से लोकसभा सांसद माला राज्य लक्ष्मी शाह, बद्रीनाथ मंदिर के रावल अमरनाथ नंबूदिरी, मंदिर समिति के अधिकारी और बड़ी संख्या में तीर्थ पुरोहित उपस्थित रहे। समारोह में पारंपरिक मंत्रोच्चारण और धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से 23 अप्रैल के दिन को पवित्र और शुभ माना गया।

बद्रीनाथ धाम के कपाट खुलने की घोषण ा होते ही चारधाम यात्रा की तैयारियों में भी तेजी आ गई। उत्तराखंड सरकार और प्रशासन स्तर पर यात्रा मार्ग, सुरक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और ठहराव सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। मुख्य मार्गों की मरम्मत, सड़क सुरक्षा और यातायात व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त करने के साथ-साथ श्रद्धालुओं के लिए पर्याप्त यात्री विश्राम स्थल, चिकित्सा सुविधा और सुरक्षा चौकियां स्थापित की जा रही हैं। प्रशासन ने यात्रियों की सुविधा के लिए हेल्पलाइन और मार्गदर्शन केंद्र भी स्थापित किए हैं।

चारधाम यात्रा के अंतर्गत गढ़वाल हिमालय के अन्य प्रमुख धामों की तिथियां भी घोषित कर दी गई हैं। उत्तरकाशी जिले में स्थित गंगोत्री और यमुनोत्री धाम के कपाट 19 अप्रैल को अक्षय तृतीया के अवसर पर खोले जाएंगे। वहीं रुद्रप्रयाग जिले में स्थित केदारनाथ धाम के कपाट महाशिवरात्रि के दिन खोले जाएंगे। इन तिथियों के साथ ही श्रद्धालुओं को यात्रा की योजना बनाने में आसानी होगी और प्रशासन भी सुरक्षित और सुव्यवस्थित यात्रा सुनिश्चित कर सकेगा।

बद्रीनाथ धाम में कपाट खुलने के बाद श्रद्धालुओं को दर्शन करने के लिए विस्तृत व्यवस्था की गई है। मंदिर समिति ने पूजा व्यवस्था, भंडारे, आरती और दर्शन के समय का विस्तृत कार्यक्रम तय किया है। मंदिर परिसर में साफ-सफाई और स्वच्छता बनाए रखने के लिए विशेष टोलियां नियुक्त की गई हैं। स्थानीय प्रशासन, पुलिस और होमगार्ड की तैनाती के माध्यम से श्रद्धालुओं की सुरक्षा और मार्गदर्शन सुनिश्चित किया जाएगा। इस बार प्रशासन ने चारधाम यात्रा में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए यातायात को और सुगम बनाने पर विशेष जोर दिया है। मुख्य सड़क मार्गों पर यातायात नियंत्रण, पार्किंग और बस स्टैंड की व्यवस्था का विस्तृत नक्शा तैयार किया गया है। सड़क मार्गों पर यातायात पुलिस की उपस्थिति, संकेत और दिशा निर्देश, तथा आपातकालीन वाहन और एम्बुलेंस की व्यवस्था की गई है। इसके अलावा श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए मोबाइल सूचना केंद्र और हेल्पलाइन नंबर भी सक्रिय रहेंगे। स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में भी प्रशासन ने कई उपाय किए हैं। प्रमुख मार्गों पर स्वास्थ्य शिविर, प्राथमिक चिकित्सा केंद्र और ऑक्सीजन सुविधा सुनिश्चित की गई है। चिकित्सा टीम हर समय तैयार रहेगी। इसके अलावा पहाड़ी क्षेत्रों में यात्रा करने वाले श्रद्धालुओं के लिए मार्ग में पीने के पानी और विश्राम स्थलों की भी पर्याप्त व्यवस्था की गई है।

सुरक्षा को लेकर भी विशेष तैयारियां की गई हैं। पुलिस और होमगार्ड की संयुक्त टीमों को प्रमुख स्थानों पर तैनात किया गया है। मार्गों में सीसीटीवी निगरानी और ड्रोन निगरानी की व्यवस्था भी की गई है। बद्रीनाथ धाम के आसपास श्रद्धालुओं की भीड़ को नियंत्रित करने के लिए बैरिकेडिंग और मार्ग चिन्हित किए गए हैं। धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी इस बार यात्रा का महत्व बढ़ाया गया है। यात्रा मार्ग में स्थानीय संस्कृति, परंपरा और उत्तराखंड की प्राकृतिक सुंदरता को दर्शाने वाले कार्यक्रम आयोजित

किए जाएंगे। श्रद्धालुओं के मनोरंजन और शिक्षा दोनों का ध्यान रखते हुए पर्वतीय क्षेत्रों में सांस्कृतिक कार्यक्रम, लोकगीत, नृत्य और भजन संध्या का आयोजन किया जाएगा। मंदिर समिति ने बताया कि श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए ऑनलाइन दर्शन और आरती व्यवस्था पर भी काम चल रहा है। दूर-दराज के लोग भी डिजिटल माध्यम से भगवान के दर्शन और पूजन में भाग ले सकेंगे। मंदिर परिसर में सुरक्षा, स्वच्छता और भक्तों की सुविधा के लिए विशेष वॉकर मार्ग और शेड का निर्माण किया गया है। बद्रीनाथ धाम के कपाट खुलने के साथ ही स्थानीय व्यापारियों और सेवा प्रदाताओं की भी तैयारियां शुरू हो गई हैं। होटल, ढाबा, टैक्सी और हेरिटेज होस्टल के अलावा श्रद्धालुओं के लिए भोजन और आवास की पर्याप्त व्यवस्था सुनिश्चित की गई है। स्थानीय कारीगर और हस्तशिल्प उत्पाद प्रदर्शनी भी स्थापित की जाएगी ताकि श्रद्धालुओं को उत्तराखंड की संस्कृति और शिल्पकला का अनुभव मिल सके। उत्तराखंड सरकार ने श्रद्धालुओं को सुरक्षित और यादगार यात्रा सुनिश्चित करने के लिए एक विशेष निर्देश जारी किया है कि सभी यात्रा मार्गों पर पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छता का ध्यान रखा जाएगा। प्लास्टिक पर रोक, कचरा प्रबंधन और जंगल क्षेत्र में आग व अन्य जोखिमों से बचाव के लिए विशेष उपाय किए गए हैं। चारधाम यात्रा के साथ ही श्रद्धालुओं के लिए जानकारी और मार्गदर्शन के लिए मोबाइल एप और हेल्पलाइन नंबर जारी किए गए हैं। इसमें यात्रा के समय, मौसम की स्थिति, सुरक्षा और स्वास्थ्य संबंधी जानकारी उपलब्ध कराई जाएगी। प्रशासन ने हर जिले में कंट्रोल रूम स्थापित किया है जो यात्रियों की सहायता करेंगे और किसी भी आपात स्थिति में तुरंत कार्रवाई करेंगे। इस तरह 23 अप्रैल से बद्रीनाथ धाम खुलने की घोषणा के साथ ही श्रद्धालुओं में उत्साह का माहौल है। छह महीने की प्रतीक्षा और शीतकालीन बंदी के बाद देवभूमि उत्तराखंड का यह पावन धाम भक्तों का स्वागत करने के लिए तैयार है। मंदिर समिति, प्रशासन और स्थानीय समुदाय ने मिलकर यह सुनिश्चित किया है कि चारधाम यात्रा न केवल श्रद्धा और भक्ति का प्रतीक बने बल्कि सुरक्षित, सुव्यवस्थित और यादगार अनुभव भी प्रदान करे। बद्रीनाथ धाम का यह महापर्व श्रद्धालुओं के जीवन में नई ऊर्जा, भक्ति की भावना और आस्था की मजबूत गाथा लेकर आएगा। इस बार की यात्रा में उत्तराखंड सरकार और प्रशासन ने हर पहलू पर ध्यान दिया है ताकि भक्त अपने धार्मिक कर्तव्य का पालन पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ कर सकें।

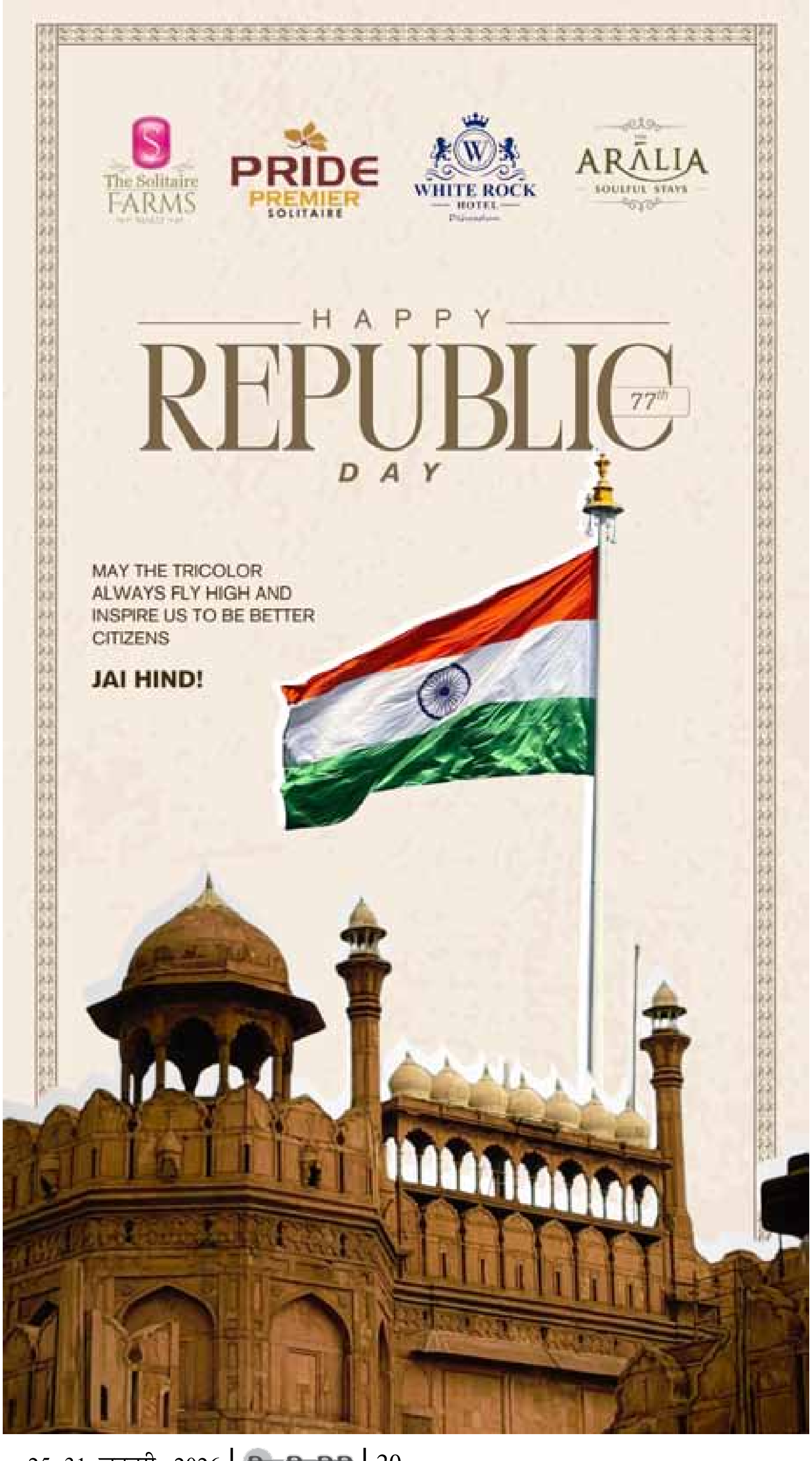

VEER MADHO SINGH BHANDARI UTTARAKHAND TECHNICAL UNIVERSITY CAMPUS INSTITUTE

प्रौद्योगिकी संस्थान, गोपेश्वर

Institute of Technology, Gopeshwar

Approved By AICTE, NEW DELHI, Estb. in 2013 by Govt. of Uttarakhand

26 JANUARY

Happy REPUBLIC DAY

ACHIEVEMENTS & AWARDS

- Organized International Conference on Indigenous Knowledge System and Sustainable Development on 26–27 November 2025.
- Best Research Paper Award to Mr. Sandeep Negi, B.Tech (CSE) Final Year in Nov, 2025.
- Best Researcher Award to Dr. Arun Uniyal, Assistant Professor, Institute of Technology, Gopeshwar during Teacher of the Year-2025 by UCOST, Dehradun.
- Research Paper entitled "Greenhouse Environmental Monitoring and Control using Thing Speak" has been published in Journal of International Aids Society (JIAS) by Mr. Kshiti Moni et al., B.Tech (ECE) Final Year in June, 2025.
- Six B.Tech (CSE) final year students qualified at GATE-2025 Exams.
- Research Project on "Early Warning System for Human–Wildlife Conflict Mitigation Using AI" was funded to Prof. Amit Agarwal, Director, IT Gopeshwar worth 3.5 Lac.
- Mr. Harsh Dhiman, B.Tech (CSE) final year got placement at with package 5.5 LPA.
- Mr. Akshit Singh & Team got 1st prize worth Rs. 50,000/- cash at State Level Hackathon "UTKARSH 1.0" for Dashboard Development at VMSB Uttarakhand Technical University, Dehradun by the Governor of Uttarakhand in May, 2025.
- 02 new Smart Classes have been established in the Institute.
- Basket Ball ground has been developed and renovation of Institute Gym was completed.

B. Tech. Courses

*Civil Engineering
*Mechanical Engineering
*Computer Science Engineering
*Electrical Engineering
*Electronics & Communications Engineering

*Bachelor of Computer Applications (BCA)

Call: 8755700134 | Email: director134@uktech.net.in

ADVANCE BOOKING STARTS

BOOK NOW

EXPERIENCE HELI TOUR WITH

Himgiri Aviation & Tourism

SINCE 2018

A Unit of दिव्य हिमगिरि

Chardham

YATRA BY HELICOPTOR

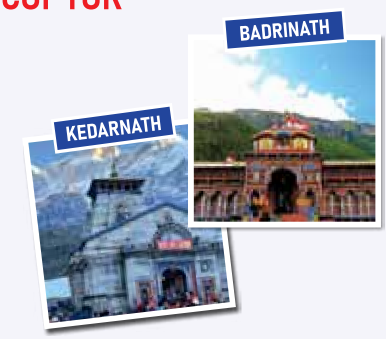

OPENING DATES

Yamnotri	Gangotri	Kedarnath	Badrinath
19 April, 2026	19 April, 2026	22 April, 2026*	23 April, 2026

* Possible Date

BEST COMPLIMENTS FROM HIMGIRI AVIATION

Happy REPUBLIC DAY

26 JANUARY 2026

Contact for Reservation 8433456398, 9410353164

Email: himgiritourism@gmail.com

6 Municipal Road, Opp. Oxford School of Excellence, Dalanwala, Dehradun-248001 (UK)

सभी प्रदेशवासियों को

गणतंत्र दिवस

की हार्दिक शुभकामनाएं

अभिषेक पंत
पार्षद, वार्ड न. 60
नगर निगम, देहरादून

26 जनवरी 2026

Rishikesh® HANDMADE
soulful handmade creations

PREMIUM AUTHENTIC PRODUCTS OF

HIMALYAN FIBRE

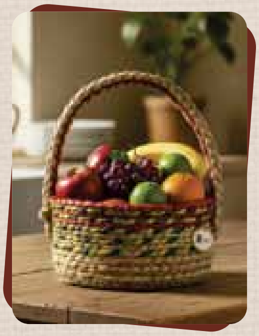

Rishikesh
Natural Fiber Handicrafts Producer Company Pvt. Ltd.

Visit for Products: ***www.rishikeshhandmade.com***

MOTHER CONCERN

BHARTIYA GRAMOTTHAN SANSTHA

Gramotthan Bhawan:
Upper Road Dhalwala (Rishikesh)
Tehri Garhwal, Uttrakhand 249201
Email: *bgsuttranchal@rediffmail.com*
Contact: *(+91) 7351009107, 9411571947*
Website: *https://bgsuttarakhand.org.in/*

R.N.I.: UTTHIN/2010/41629 | Postal Regd. UA/DO/DDN/01/2025-2027